वर्ष - 4

अंक - 14

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

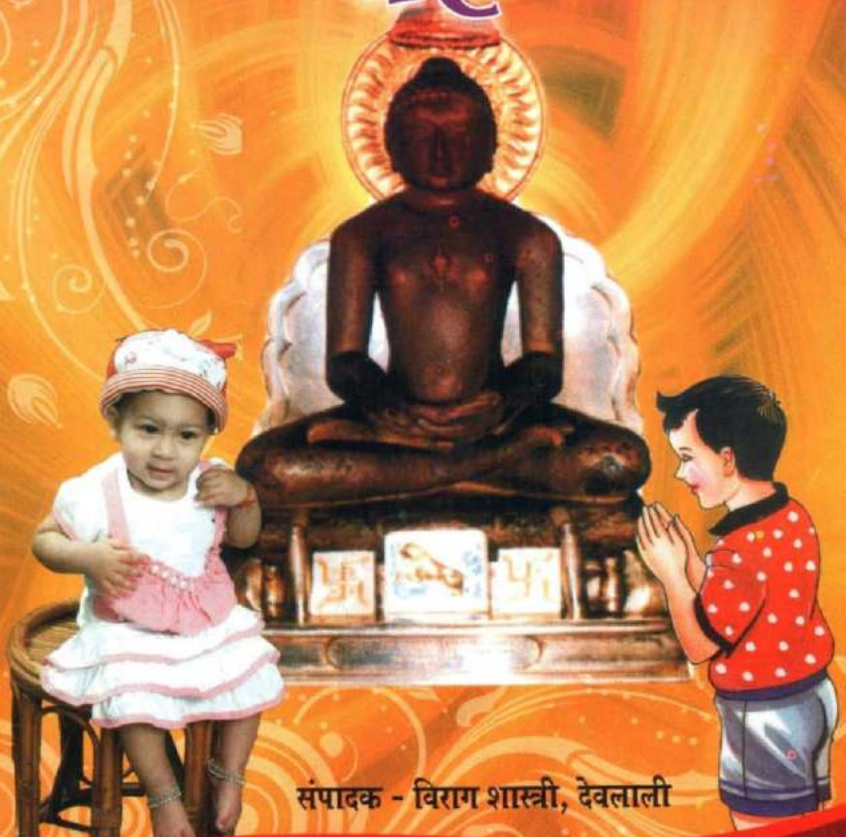

संपादक - विराग शास्त्री, देवलाली

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

कविताएँ

(१)

णमोकार है प्यारा मंत्र ।
पंच परम परमेष्ठी मंत्र ।
प्रात: उठकर इसको जपना ।
सोने के पहले भी पढ़ना ।
झूठे मुंह हो कभी न पढ़ना ।
सच्ची श्रद्धा से ही पढ़ना ।
पंच प्रभु का प्यारा नाम ।
णमोकार में इनका धाम ॥

(२)

हम जैनी बच्चे हैं सच्चे ।
सत्य मार्ग पर आगे बढ़ते ।
पंच प्रभु हैं ईश हमारे ।
उनको सौ सौ नमन हमारे ।
पाप से दूर ही रहते हैं ।
अच्छी बातें करते हैं ।

भील की कहानी

एक भील रहता था वन में,
डूबा रहता था चिन्तन में।
इक मुनिवर के दर्शन पाये।
मुनिवर ने इक नियम दिलाया।
कौए का न खाना मांस।
फिर चाहे चली जाये श्वांस।
भील हो गया था बीमार।
वैद्यराज ने किया विचार।
कौए का मांस यदि खाओ,
अपने प्राण अभी बचाओ।
नियम पर था पूरा विश्वास।
कौए का न खाया मांस।
मैं तो अपना नियम निभाऊँ।
चाहे मृत्यु अभी पा जाऊँ।
मरकर भील ने सुर गति पाली।
एक नियम की महिमा भारी।।

हमारे आचार्य

आचार्य श्री भद्रबाहु

आचार्य भद्रबाहु अंतिम पांचवे श्रुतकेवली थे। आचार्य भद्रबाहु का जन्म कोटिपुर (देवकोट) ग्राम में हुआ था। आचार्य भद्रबाहु की माता का नाम सोमश्री और पिता का नाम सोमशर्मा था। आचार्य भद्रबाहु का जन्म ब्राह्मण जाति में हुआ था। गुरु का प्रथम दर्शन ही आचार्य भद्रबाहु के वैराग्य का कारण बना। आचार्य भद्रबाहु के संघ में 24 हजार मुनिराज थे। आचार्य भद्रबाहु ने मुकुटबद्ध सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य को दीक्षा दी थी। आचार्य भद्रबाहु ने अपने दीक्षित सम्राट शिष्य चन्द्रगुप्त का नाम विशाख मुनि रखा था।

आचार्य भद्रबाहु ने अपने निमित्त ज्ञान से जान लिया था कि उत्तर भारत में 12 वर्ष का महाभयंकर दुर्भिक्ष पड़ने वाला है और यदि इस समय में यहाँ रहेंगे तो मुनिचर्या का निर्वाह करना कठिन होगा। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने दक्षिण भारत की ओर विहार किया था।

आचार्य भद्रबाहु का समाधि मरण ई. पूर्व 365 को श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरि पर्वत पर हुआ था। इनके समाधिमरण की पूरी किया मुनि चन्द्रगुप्त ने कराई थी।

आचार्य भद्रबाहु की समाधि के पश्चात् श्रमण परम्परा को आगे बढ़ाने वाले अंगपूर्व के धारी विशाखाचार्य, आचार्य अर्हद्बली, आचार्य धरसेन, आचार्य पुष्पदंत व भूतबली आदि महानतम आचार्य हुये हैं।

खोजो तो जानें

नीचे दिये चित्र में आठ तीर्थंकरों के चिन्ह जो गल्ती से आपस में मिल गये हैं। जरा दिमाग लगाईये कि किन तीर्थंकरों के कौन से चिन्ह यहाँ पर हैं।

कुंथुसागर जी

चंद्रप्रभ जी

अरनाथ

सुमतिनाथ जी

सुपार्श्वनाथ जी

शांतिनाथ जी

मुनिसुव्रत जी

पार्श्वनाथ जी

प्रेरक प्रसंग

भाव हिंसा का फल

मध्यलोक के अंतिम समुद्र में हजार योजन लम्बा एक राघव मच्छ रहता है। उसकी आंख की पलकों पर एक तंदुल मच्छ बैठा रहता है। राघव मच्छ जब मुंह खोलता है तो अनेकों समुद्र में रहने वाले छोटे-छोटे प्राणी उसके मुंह में चले जाते है और उनमें से कोई कान, कोई नाक और कोई मुख से ही बाहर निकल आते हैं। तंदुल मच्छ सोचता कि ये राघव मच्छ कितना मूर्ख है ? इतने प्राणी इसके मुंह में अनायास आ जाते हैं और यह उन्हें छोड़ देता है। मैं इसकी जगह पर होता तो इन सबको अपना भोजन बना लेता। इन बुरे भावों के फल से तंदुल मच्छ सातवें नरक में चला जाता है।

नैतिकता

प्रसिद्ध विद्वान पण्डित गोपालदासजी बरैया सन् 1605 में अकलूज निवासी सेठ नाथारंग जी गांधी के साथ रुई और अनाज का व्यापार करते थे। सेठ नाथारंग जी ने अपने निवास स्थान अकलूज में बम्बई प्रान्तिक सभा के अधिवेशन का आयोजन किया। इस प्रतिष्ठा में बरैयाजी को जाना था। अत: उनके एक परम मित्र सूरजचन्द गांधी ने ढ़ाई सेर देशी शुद्ध शक्कर ले जाकर पण्डितजी से कहा कि यह शक्कर आप अकलूज में हमारे घर पर दे देना। पण्डितजी ने अपना सामान तोलकर देखा तो वह पूरा 15 सेर निकला। उन दिनों एक आदमी रेल में 15 सेर सामान ही अपने साथ फ्री ले जा सकता था। अत: आपने मित्रता की परवाह न कर उस शक्कर को ले जाने से साफ इंकार कर कह दिया कि मैं यह अधिक वजन ले जाकर रेल की चोरी नहीं कर सकता। धन्य है पण्डितजी की नैतिकता।

वीडियो गेम में हिंसा

– विराग शास्त्री

– हुरररररररर.....रे आज से स्कूल की छुट्टी।

– हाँ! अब बहुत मजा आयेगा।

– हाँ! अब खूब खेलेंगे और मस्ती करेंगे।

– हाँ यार ! इन छुट्टियों में मैं तो अपने पापा के साथ दक्षिण भारत के जैन तीर्थों की वंदना करने जाऊँगा और तू बता.....।

– मैं बाहर तो नहीं जाऊँगा, पर घर पर ही रहकर छुट्टियों का आनंद लूँगा। मेरे पापा ने मेरे लिये नया वीडियो गेम लाकर दिया है मैं तो अब खूब खेलूँगा।

– अरे वाह! नया वीडियो गेम। उसमें कौन–कौन से गेम हैं ?

– उसमें बंदूक वाले, बम फोड़ने वाले और फाइटिंग वाले बहुत सारे गेम हैं। उन्हें खेलने में बहुत मजा आता है। कल रात को मैंने 45 दुश्मनों को गोली मारी थी और गेम जीता था।

– हे भगवान!

– क्या हुआ ? तुम तो ऐसे घबड़ा रहे हो जैसे गोली तुम्हें लग गई हो..

– ऐसा ही समझो...

– क्या मतलब..

– मैं कुछ कहूँगा तो तुम बुरा मान जाओगे

– नहीं यार! इसमें बुरा मानने की क्या बात है ? बताओ ना आखिर क्या बात है ?

– अच्छा! ये बताओ कि जब तुम ये हिंसा वाले गेम खेलते हो तो तुम्हारे परिणाम कैसे होते हैं?

– अरे यार! इतने बढ़िया गेम हैं कि गेम खेलते समय सब कुछ भूल जाता हूँ।

- तुम्हें पता है इसमे हिंसा का भयंकर पाप लगता है।
- पागल हो गये हो क्या बिना किसी के मरे पाप लगता है? वह तो टी.वी. में मरते हैं। टी.वी. के चित्र तो नकली हैं ना।
- हाँ तुम ठीक कह रहे हो कि टी.वी. के चित्र नकली हैं। परन्तु मारने के भाव तो असली हैं ना। हमें पाठशाला में बताया गया है कि हमें अपने भावों के अनुसार कर्म का बंध होता है। हमें दीदी ने एक कहानी भी बताई थी....
- कैसी कहानी ? सुनाओ ना ।
- दो चोर थे। उनका काम ही चोरी करके अपना परिवार का पालन पोषण करना था। एक दिन उनके गांव में कोई बड़े विद्वान आये। पहला चोर अपने साथी चोर से बोला कि देखो भाई! हम लोग रोज चोरी करते हैं। आज हम मंदिर जाकर पंडितजी के प्रवचन सुनेंगे।

  दूसरा चोर बोला – अरे! पागल मत बन। आज तो सही मौका है चोरी करने का। गांव के सारे लोग प्रवचन सुनने जायेंगे तो चोरी करने मे आसानी रहेगी। पहला चोर बोला – नहीं नहीं! आज मैं तो मंदिर जाऊँगा। दूसरे चोर ने चोरी करने का निर्णय किया। पहला चोर मंदिर तो चला गया पर उसे धर्म की रूचि न होने से अच्छा नहीं लग रहा था और वह मन ही मन सोच रहा था मैं तो व्यर्थ में मंदिर आ गया। मेरा साथी तो आज चोरी करके मालामाल हो जायेगा। मैं आतमा–परमातमा के चक्कर में फंस गया। दूसरा चोर जो चोरी करने गया था वह चोरी करते हुये सोच रहा था कि मैं कितना पापी हूँ.. मेरा मित्र आज धर्म का लाभ ले रहा है और मैंने लोभ में आकर धर्म की इतनी प्यारी बातें छोड़ दीं। धिक्कार है मेरे जीवन पर।

  इसी समय दोनों की मृत्यु हो गई। चोरी करने वाला चोर मरकर स्वर्ग गया और मंदिर में बैठने वाला चोर मरकर नरक चला गया।
- हे भगवान!
- अब समझे कि प्रत्येक जीव को अपने परिणामों का फल भोगना पड़ता है।
- हाँ हाँ समझ गया। लेकिन ऐसे तो हम वीडियो गेम ही नहीं खेल पायेंगे।
- क्यों नहीं खेल पायेंगे। वीडियो गेम भी कई प्रकार के आते हैं। हमें ऐसे गेम खेलना चाहिये जिसमें हिंसा न हो और कुछ दिमाग की मेहनत हो। हिंसा वाले गेम खेलकर पाप का बंध क्यों करना?
- वाह! तुमने तो बहुत अच्छी शिक्षा दे दी। थैंक्स यार।
- थैंक्स किस बात का ? तुमने यह बात समझ ली यही बहुत बड़ी बात है।

समाप्त

अचार का विचार

अचार - मर्यादा कितनी...?

चटखारे ले कर खाया जाने वाला पदार्थ जिसे अचार कहा जाता है। वह हमारे लिए भक्ष्य है या अभक्ष्य ? चरणानुयोग के अन्तर्गत भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

अचार की मर्यादा आठ पहर अर्थात् चौबीस घण्टे की बताई गई है इसके बाद उसमें त्रस जीवों की उत्पत्ति होना प्रारम्भ हो जाती है और दिन-प्रतिदिन दुगुनी-दुगुनी संख्या में जीव पैदा होते रहते हैं इसे हम इस प्रकार कह सकते हैं -

आचार = त्रस जीवों का पिण्ड

आचार्यकल्प पंडित प्रवर टोडरमल जी के अनन्य सहयोगी ब्र. रायमल्ल जी ज्ञानानन्द श्रावकाचार में लिखते हैं 'अब अचार, लौंजी, मुरब्बा (जैम-जैली, शर्बत आदि को भी इसी के अन्तर्गत समझना चाहिए) के दोष कहते हैं। नमक, घृत-घी, तेल का निमित्त पाकर नींबू, केरी आदि के अथाने में दो चार वर्ष तक नमी नहीं मिटती जिससे उसमें अनेक त्रस उत्पन्न होते रहते है और उसी में मरती है इस प्रकार जब तक उसकी स्थिति रहती है, तब तक उसमें जन्म-मरण होता ही रहता है, सो जिसकी बुद्धि नष्ट हुई है और आचरण भ्रष्ट हुआ है वे ही इनका सेवन करते हैं इन्हें दोष युक्त जान तजना योग्य है और सर्वथा न रहा जाये तो आठ पहर का खाना निर्दोष है।'

अचार को नरक का द्वार बताते हुए महाभारत के शांति पर्व 237 में लिखा है -

चत्वारि नरक द्वाराणि प्रथमं रात्रि भोजनम्।
परस्त्री गमनं चैव, सन्धानन्त कायकम्।।

अर्थ :– चार नरक के द्वार है जिसमें सबसे पहला रात्रि भोजन है। दूसरा परस्त्री सेवन, तीसरा अचार खाना और चौथा अनंतकाय (कन्दमूल) खाना है।

ये तो हुई अचार की शास्त्रीय व्याख्या लेकिन इसी बात को हम सरल रूप में खेल–खेल में इस प्रकार समझ सकते हैं आप सभी शतरंज से भी परिचित ही होगें – तो इसी शतरंज के हम चौसठ खाने लेते है। और पहले खाने को 1 अंक देते हैं और दूसरे खाने को 2, तीसरे में चार इसी तरह दुगुनी–दुगुनी संख्या करते हुए पूरे चौसठ खाने भरते हैं आप स्वयं देखेगें कि मात्र 32 दिन के बाद ही जीवों की संख्या अरबों तक पहुँच जाती है फिर 64 वें दिन कितनी संख्या पहुँच जाती है ?

1- 1	17- 65536	33- 4294967296	49- 281474976710656
2- 2	18- 131072	34- 8589934592	50- 562949953421312
3- 4	19- 262144	35- 17179869184	51- 1125899906842624
4- 8	20- 524288	36- 34359738368	52- 2251799813685248
5- 16	21- 1048576	37- 68719476736	53- 4503599627370496
6- 32	22- 2097152	38- 137438953472	54- 9007199254740992
7- 64	23- 4194304	39- 274877906944	55- 18014398509481984
8- 128	24- 8388608	40- 549755813888	56- 36028797018963986
9- 256	25- 16777216	41- 1099511627776	57- 72057594037927972
10- 512	26- 33554432	42- 2199023255552	58- 144115188075855944
11- 1024	27- 67108864	43- 4398046511104	59- 288230376151711888
12- 2048	28- 134217728	44- 8796093C22208	60- 576460752303423776
13- 4096	29- 268435456	45- 17592186044416	61- 1152921504606847552
14- 8192	30- 536870912	46- 35184372088832	62- 2305843009213695104
15- 16384	31- 1073741824	47- 70368744177664	63- 4611686018427390208
16- 32768	32- 2147483648	48- 140737488355328	64- 9223372036854780416

अब आप स्वयं विचार करें कि मर्यादा से अधिक का अचार आपके खाने योग्य है या नहीं।

पता नहीं बेटा ?

बेटा – माँ ! पाठशाला में गंदी बातें सिखायी जाती हैं क्या ?

माँ – नहीं तो बेटा !

बेटा – तो वहाँ क्या सिखाते है ?

माँ – वहाँ अच्छी – अच्छी शिक्षायें मिलती है, अच्छी आदतें सिखाते हैं, भगवान बनने के संस्कार मिलते है और अधिक क्या कहें हम उन शिक्षाओं को अपनायेंगे तो हम भी भगवान बन जायेंगे।

बेटा – अच्छा माँ ! पाठशाला इतनी अच्छी है तो मैं अवश्य ही जाया करूँगा, परन्तु .....।

माँ – परन्तु क्या बेटा ?

बेटा – पाठशाला इतनी अच्छी होती है तो सारे बच्चे पाठशाला क्यों नहीं जाते है माँ ?

माँ – पता नहीं बेटा।

– ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना

शाकाहारी भी थे डायनासोर

भारत में भी करोडों वर्ष पहले डायनासोर थे। पंजाब यूनिवर्सिटी के सेंटर फार एडवांस स्टडी ने जियोलॉजी की डायनासोर लैब में भारत में पाये गये डायनासोरों के अवशेष रखे हैं।

मध्यप्रदेश के धार जिले में २५ मीटर की लंबाई वाले डायनासोर के अवशेष मिले हैं। गुजरात के कच्छ में नर्मदा नदी के किनारे डायनासोर के अवशेष मिले हैं। इन डायनासोरों में सौरापोड डायनासोर शाकाहारी थे। ये पेड़-पौधे खाकर पेट भरते थे। ये ३५ से ४० मीटर लंबे हरे फूल पत्ते खाकर जीवनयापन करते थे। अन्य डायनासोर मांसाहारी थे। डायनासोर लगभग ५० प्रजातियों के होते थे।

वे कौन थे ?

वे कौन से मुनिराज थे जो गोपाचल पर्वत,ग्वालियर से मोक्ष पधारे ?

– श्री सुप्रतिष्ठ केवली

वे कौन से मुनिराज थे जिनका उपदेश सुनकर चाणक्य को वैराग्य हो गया था ?

– श्री महीधर मुनिराज।

वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें चंद्रग्रहण देखकर वैराग्य हो गया था ?

– श्री अभयघोष मुनिराज।

वे कौन से मुनिराज थे जिनका विवाह हुआ था फिर भी वे बाल ब्रह्मचारी थे ?

– श्री जम्बू स्वामी मुनिराज।

पंचम काल ऐसे कौन से मुनिराज हुये हैं जो भविष्य में तीर्थंकर होंगे ?

– श्री समन्तभद्र मुनिराज।

वे कौन से मुनिराज थे जिनसे राम ने दीक्षा ली थी ?

– श्री सुव्रत मुनिराज।

वे कौन से मुनिराज थे जिन पर आक्रमण के लिये पांच सौ कुत्ते छोड़े गये और वे मुनिराज को देखकर थांत हो गये ?

– यशोधर मुनिराज।

वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने यह कहा था कि जो कोटि शिला को उठायेगा वह ही रावण को मारने में निमित्त बनेगा ?

– श्री अनन्तवीर्य केवली।

वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें देवों ने 12 वर्ष तक आहार कराया था ?

– चंद्रगुप्त मुनिराज।

वे कौन से मुनिराज थे जिनके प्रभाव से सियार ने रात्रि भोजन का त्याग कर दिया था ?

– श्री सागरसेन मुनिराज।

वे कौन से मुनिराज थे जिनसे द्रोणाचार्य ने दीक्षा ली थी ?

– विदुर मुनिराज।

अंग्रेजी फिलॉसफी

नंबर इज द वन – तू सत्यवादी बन।
नंबर इज द टू – तू आत्मा को छू।
नंबर इज द थ्री – तू पाप से हो जा फ्री
नंबर इज द फोर – तू मत बन चोर।
नंबर इज द फाइव – अच्छी बनाओ लाइफ।
नंबर इज द सिक्स – पाठशाला टाइम फिक्स।
नंबर इज द सेवन – मुक्ति का मार्ग एवन।
नंबर इज द एट – खोलो मोक्ष का गेट।
नंबर इज द नाइन – जिनवर की मुद्रा फाइन।
नंबर इज द टेन – हम बनेंगे पक्के जैन।

- ***Do not drink Appy Fizz.***
It contains cancer causing agent.
- ***Do not eat Kurkure***
Co2 it contains high amount of Plastic if you don't believe burn kurkure you can see plastic melting.
-Times of India, Delhi
- ***Avoid theses tablets they are very dangerour***
D'Cold, Vicks Action -500, Actified Coldarin, Cosome, Nice, Nimulid, Cetrizet-D, they contain Phenyl Pro Panol Amide PPA. which causes strokes and these tablets are banned in US.

अनमोल वचन न्याय से कमाओ, विवेक से खर्च करो, संतोष से रहो।

नीचे दिये तीर्थंकर के चिन्ह पहचानिये और रंग भरिये

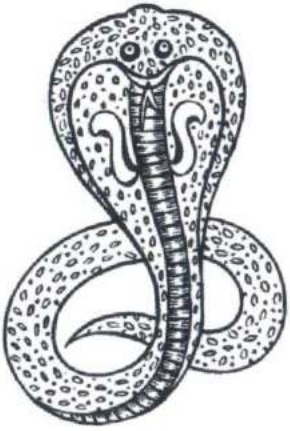

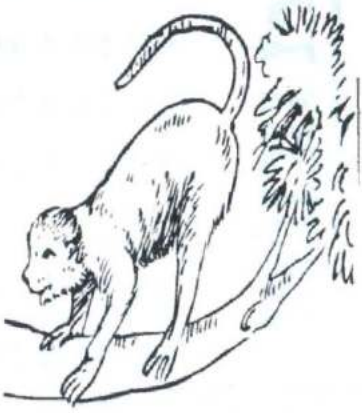

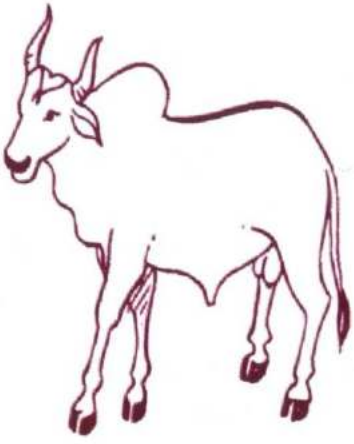

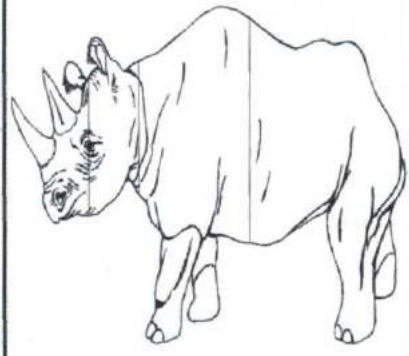

महान व्यक्तित्व
गुरुदेवश्री कानजी स्वामी

- कहो आत्मन्! इस बार छुट्टियों में कहाँ जा रहे हो?
- यार! इस बार मैं अपने भाई के साथ सोनगढ़ जा रहा हूँ।
- अच्छा! सोनगढ़ किसी हिल स्टेशन का नाम है क्या ?
- नहीं! जय। सोनगढ़ तो हमारे लिये तीर्थस्थान जैसा है। यहाँ विशाल जैन मंदिर हैं।
- यह सोनगढ़ है कहाँ और इसकी क्या विशेषता है ?
- सोनगढ़ गुजरात के भावनगर जिले में है। यह पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की कर्म भूमि है। उन्होंने वहाँ रहकर पूरे विश्व को आत्मा के रहस्यों का ज्ञान कराया और वे अनेक जीवों को आत्मकल्याण में निमित्त बने।
- अरे वाह आत्मन्। मुझे कानजी स्वामी जी के बारे में बताओ ना।
- तुम उनके बारे में नहीं जानते ? ऐसे महापुरुष विरले ही जन्म लेते हैं। पूज्य गुरुदेवश्री का जन्म 21 अप्रेल 1890 को भावनगर जिले के उमराला नामक छोटे से गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम उजमबा और पिता का नाम मोतीचंद भाई था। उनका जन्म श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय में हुआ था।
- ये स्थानकवासी क्या होता है ?
- अरे जय! जैन धर्म की अनेक शाखाओं में एक शाखा का नाम स्थानकवासी सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के साधु मुंह पर पट्टी बांधते हैं और मूर्ति पूजा नहीं करते।
- फिर क्या हुआ?
- कानजी स्वामी के बचपन का नाम कानू था। वे बचपन से वैरागी प्रवृत्ति के थे। अतः उन्होंने सन् 1914 में मात्र 24 वर्ष की अल्प आयु में स्थानकवासी सम्प्रदाय में दीक्षा ले ली। साधु वेश होने पर भी उनके मन को शांति नहीं मिल रही थी। सन् 1920 में उन्हें आचार्य कुन्दकुन्द का महान ग्रन्थ समयसार मिला, जिसे पढ़कर उन्हें अत्यंत

आनंद हुआ। 1926 में उन्हें पण्डित टोडरमलजी द्वारा रचित अद्भुत ग्रन्थ मोक्षमार्ग प्रकाशक मिला जिसे पढ़कर उन्हें निर्णय हो गया कि सच्चा धर्म दिगम्बर जैन धर्म ही है, उन्होंने संकल्प कर लिया कि वे श्वेताम्बर मत और मुंह पट्टी का त्यागकर दिगम्बर धर्म स्वीकार करेंगे।

– तब तो उन्होंने बहुत महान कार्य किया..

– हाँ। वे तो स्थानकवासी सम्प्रदाय के बहुत बड़े साधु थे। जब लोगों ने यह सुना कि कानजी स्वामी श्वेताम्बर मत का त्याग कर रहे हैं तो उन्हें बहुत डराया, धमकाया, प्रलोभन दिया यहाँ, तक कि जान से मारने की धमकी भी दी।

– फिर क्या हुआ?

– गुरुदेवश्री की श्रद्धा सुमेरू पर्वत के समान अचल थी। उन्होंने संकटों की चिन्ता न करके समस्त यश को त्याग दिया और सन् 1929 में सोनगढ़ में महावीर जयन्ती के दिन भगवान पार्श्वनाथ की फोटो के सामने मुंहपट्टी का त्याग कर दिया और दिगम्बर धर्म को स्वीकार करते हुये स्वयं को दिगम्बर श्रावक घोषित कर दिया।

– अरे वाह! गुरुदेवश्री की कहानी में तो बहुत आनंद आ रहा है आगे सुनाओ ना।

– गुरुदेवश्री ने सोनगढ़ में ही स्वाध्याय करना प्रारंभ कर दिया। अपने आत्म–अनुभव के बल पर उन्होंने समयसार आदि ग्रन्थों के अनेक रहस्यों को समाज के सामने रखा। उनकी अद्भुत प्रवचन शैली और गहन चिन्तन प्रभाव से समाज के लोग उनके प्रवचनों का लाभ लेने के लिये सोनगढ़ जाने लगे। उनके प्रभाव से हजारों श्वेताम्बर भाई–बहिनों ने श्वेताम्बर धर्म त्यागकर दिगम्बर धर्म को अपना लिया।

– अरे वाह! यह महान कार्य तो कोई महापुरुष ही कर सकता है।

– और नहीं तो क्या।

– फिर क्या हुआ?

– सन् 1936 में सोनगढ़ में स्वाध्याय भवन का निर्माण हुआ और सन् 1941 में प्रथम पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ। गुरुदेवश्री के मार्गदर्शन में अनेक विद्वान तैयार होने लगे और उनके ही सान्निध्य में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर और बाल शिविर का आयोजन प्रारंभ हुआ।

– हाँ! तभी आज देश में हर वर्ष सैंकड़ों शिविर लगने लगे हैं।

– गुरुदेवश्री ने पूरे देश के जैन तीर्थों की वंदना की और उनके जीवन के प्रभावना काल में 33 पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें एवं 33 वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुये। उन्होंने

लगभग 45 वर्ष तक अनवरत नियमित रूप से प्रवचन किये। अनुशासन, समय का पालन, वात्सल्य, करुणा, निडरता, सहजता, निश्छल आदि अनेक गुणों के धारी पूज्य गुरुदेवश्री ने देश-विदेश में ज्ञान तत्वज्ञान का प्रचार किया।

- अच्छा आत्मन् ! हम उन्हें पूज्य गुरुदेव क्यों कहते हैं, क्या वे साधु थे?
- नहीं जय! वे साधु नहीं थे, वे तो श्रावक थे। लेकिन उन्होंने हम सब जीवों को जिनवाणी के रहस्यों को समझाकर हजारों जीवों का कल्याण किया है इसलिये वे पूज्य जैसे ही हैं। वे तो मुनिराजों को बहुत याद करते थे और कहते थे कि वे तो मुनिराजों के दासों के दास हैं।
- हाँ! सच है मुनि जीवन तो अद्भुत होता है। उनके जीवन की और कोई विशेष बात बताओ ना।
- वे प्रतिदिन जिनेन्द्रपूजा, प्रवचन, स्वाध्याय, जिनेन्द्र भक्ति करते थे। वे प्रत्येक जीव को भगवान आत्मा कहते थे क्योंकि प्रत्येक आत्मा में भगवान बनने की शक्ति है।
- वाह! उनके विचार कितने पवित्र थे।
- हाँ जय! कई जगह लोगों ने उनका विरोध किया परंतु वे कभी घबड़ाये नहीं और यही कहते थे कि ये सब भी भूले हुये भगवान हैं।
- आत्मन्! गुरुदेवश्री अभी भी सोनगढ़ में रहते हैं क्या ?
- नहीं जय! 18 नवम्बर 1980 को पूज्य गुरुदेवश्री का स्वर्गवास हो गया था। पर गुरुदेवश्री आज भी हम सबके बीच में हैं। उनके 9000 प्रवचन उपलब्ध हैं, जिनमें 3000 प्रवचन हिन्दी में हैं। आज भी देश-विदेश में हजारों साधर्मी प्रतिदिन उनके सी.डी. प्रवचन सुनते हैं और जिनवाणी के रहस्यों को समझकर आत्मकल्याण में संलग्न हैं।
- वाह आत्मन्! तुमने आज गुरुदेवश्री के बारे में इतना बताया है अब मैं भी तुम्हारे साथ सोनगढ़ जाऊँगा।

– विराग शास्त्री, देवलाली

आभार

- संस्था की गतिविधियों से प्रभावित होकर श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन, जबलपुर ने संस्था के सहयोगी सदस्य के रूप में 5000 रु. की राशि प्रदान की।
- पूजा-मितेश के शुभ विवाह के अवसर पर श्री विपिनभाई गाला ने संस्था को 5111/- की राशि प्रदान की ।

अनमोल वचन बचपन ज्ञानाभ्यास के लिए है, यौवन संयम के लिए, और बुढ़ापा समाधि के लिये है।

हमारे तीर्थक्षेत्र

अतिशय क्षेत्र बानपुर

यह अतिशय क्षेत्र उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिले से 32 किमी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर पांच जिनमंदिर है। इसमें 10 वीं सदी की प्रतिमायें विराजमान हैं। इन जिनमंदिरों में भगवान आदिनाथ, भगवान चन्द्रप्रभ, भगवान पार्श्वनाथ की अत्यंत मनोहर प्रतिमायें विराजमान हैं। एक प्राचीन मंदिर में भगवान शान्तिनाथ की 18 फुट उत्तुंग अत्यंत मनोहर प्रतिमा विराजमान है।

यहाँ के बारे में एक कथा प्रचलित है कि एक बार यहाँ से व्यापारी देवपाल अपनी बैलगाड़ी में पेटियों के अन्दर चांदी भरकर ले जा रहा था। अचानक उसका बैल कुयें में गिर गया तो उसने कहा यदि मेरा बैल सुरक्षित बाहर निकल आयेगा तो मैं यहाँ एक सहस्रकूट चैत्यालय का निर्माण कराऊँगा। उसका बैल सुरक्षित बाहर निकल आया। उसने वहाँ अत्यंत भव्य सहस्रकूट चैत्यालय का निर्माण कराया।

इस अतिशय क्षेत्र बानपुर से सैरोनजी 55 किमी, पपौराजी 14 किमी, देवगढ़ 63 किमी, द्रोणिगिर 75 किमी की दूरी पर स्थित हैं। बानपुर पहुँचने के ललितपुर से नियमित बस सेवा उपलब्ध है।
संपर्क सूत्र - 05172-240128, 240121, 240221

चाइनीज मांझा है जानलेवा

इस वर्ष पूरे देश में चाइनीज मांझा बहुत लोकप्रिय हो रहा है। बच्चों को इस मांझे से पतंग उड़ाने में बहुत मजा आता हैं। पर क्या आप जानते हैं कि हर वर्ष मांझे से हजारों पक्षी घायल हो जाते हैं और सैकड़ों मर जाते हैं। अकेले राजस्थान में ही 2009 में लगभग 3000 पक्षी घायल हुये और अनेक पक्षी मारे गये।

चाइनीज मांझे के निर्माण में एक विशेष पदार्थ मिलाया जाता है जिससे यह सामान्य मांझे से मोटा हो जाता है और आसानी से नहीं टूटता। यह मांझा सामान्य मांझे को बहुत जल्दी से काट देता है। कई बार यह मांझा बिजली के तारों में फंस जाता है। मांझे की खींचतान से तार टूट जाता है बिजली चली जाती है। मांझे में मिलाये गये पदार्थ के कारण करंट बिजली के तार से पतंग उड़ाने वाले के हाथ में पहुँच जाता है। जनवरी में हरियाणा में चाइनीज मांझे से पंतग उड़ाने वाले एक बालक की पंतग बिजली के तार में फंस गई। हाथों में करंट फैल जाने से उसकी तुरंत मृत्यु हो गई।

इन घटनाओं को ध्यान में रखते हुये जैन युवा फैडरेशन उदयपुर के सदस्यों ने अध्यक्ष प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द शास्त्री के नेतृत्व में जिला कलेक्टर से मुलाकात की और उन्हें इन सब समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। इनसे प्रभावित होकर कलेक्टर ने तुरंत प्रभाव से चाईनीज पतंग के धागे के उपयोग और बिक्री पर रोक लगा दी।

चाईनीज मांझे से होने वाली हानियों से समाज को जागृत करने हेतु अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा जयपुर महानगर ने 'यदि आप समझदार हैं तो सोचिये' नामक पोस्टर का प्रकाशन करवाया और विभिन्न सरकारी व सामाजिक संस्थानों, अनेक विद्यालयों में इसका वितरण किया।

बच्चो! आपसे भी निवेदन है कि आप भी अपने आनंद के लिये स्वयं को भी संकट में न डालें और दूसरे जीवों की हिंसा में निमित्त न बनें।

– अशोक गदिया, उदयपुर

जैन धर्म की महान सतियाँ

सती नीली

लाट देश में जिनदत्त सेठ की पुत्री का नाम नीली था। जिनदत्त जैन धर्म का अनुयायी होने के कारण अपनी पुत्री नीली का विवाह जैन धर्म का पालन करने वाले किसी व्यक्ति के ही साथ करना चाहता था।

एक बार उसी के देश का समुद्रदत्त सेठ नीली को देखकर मोहित हो गया और उसने उसके साथ विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। परन्तु समुद्रदत्त सेठ जैन धर्म से द्वेष करने वाला था इसलिये जिनदत्त सेठ नीली का विवाह उससे नहीं करना चाहता था। जब सागरदत्त का यह बात मालूम हुई तो सागरदत्त ने कपटपूर्वक जिनधर्म स्वीकार करने का नाटक किया और जैन श्रावक जैसा आचरण करने लगा। जिनदत्त ने सोचा कि अब सागरदत्त ने जैन धर्म अपना लिया है। अतः अब नीली का विवाह इससे करने में कोई बाधा नहीं है और उसने हर्षपूर्वक नीली का विवाह सागरदत्त सेठ से कर दिया। विवाह होने के बाद सागरदत्त जैन धर्म का वेश छोड़कर फिर से जैन धर्म का विरोध करने लगा यह जानकर नीली दुखी होकर अपने घर जाने लगी तो सागरदत्त ने उसे रोक लिया। यह सब जानकर जिनदत्त इतने दुखी हो गये मानों उन्होंने अपनी पुत्री को कुंये में डाल दिया हो। परन्तु नीली ने अपना साहस नहीं छोड़ा और अधिक दृढ़ता से जैन धर्म का पालन करने लगी उसने संकल्प लिया वह अपने प्राण त्याग देगी परन्तु अपने महान जैन धर्म को नहीं छोड़ेगी।

नीली के ससुर ने विचार किया कि हमारे गुरुओं के सत्संग होने पर नीली जैन धर्म का त्याग कर देगी। ऐसा विचार करके उसने अपने गुरुओं को घर पर आमंत्रित किया, लेकिन नीली ने एक उपाय से उनकी परीक्षा की और उन्हें मिथ्या सिद्ध किया। अपने गुरुओं का अपमान देखकर समुद्रदत्त का पूरा परिवार उनसे द्वेष रखने लगे और उन्होंने नीली के शील पर झूठा आरोप लगा दिया। पाप के उदय में महान पुरुषों को

संकटों का सामना करना पड़ता है। झूठा आरोप सुनकर नीली जिनमंदिर पहुँच गई और जिनेन्द्र भगवान के सामने प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक यह कलंक दूर नहीं होगा तब तक मैं भोजन नहीं करूँगी और वहीं बैठकर जिनेन्द्रभगवान के गुणों का चिन्तवन करने लगी। उसके शील के प्रभाव से उस नगर के रक्षक देवता वहाँ आये और नीली से कहा कि हे महासती! आप अन्न–जल का त्याग करके अपने प्राणों का त्याग मत कीजिये।

उन देवताओं ने राजा को भी स्वप्न में एक बात कही। सुबह होते ही प्रतिदिन की भांति नगर के सिपाहियों ने नगर का द्वार खोलना चाहा परंतु आश्चर्य ..... द्वार खुल ही नहीं रहा था। नगर के सिपाहियों ने अनेक प्रयत्न किये परंतु द्वार नहीं खुला। अन्त में वे घबड़ाते हुये राजा के पास पहुँचे तो राजा ने स्वप्न के अनुसार बताया कि यह द्वार मात्र किसी सती स्त्री के स्पर्श से खुलेगा और वह स्त्री नीली है। नीली को बुलवाया गया। णमोकार मंत्र का स्मरण करती हुई नीली वहाँ आई और उसके पैर का स्पर्श होते ही दरवाजा खुल गया। सती शिरोमणि के शील का ऐसा प्रभाव देखकर सर्वत्र उसकी जयजयकार होने लगी और उस पर लगा मिथ्या कलंक दूर हो गया।

सागरदत्त ने भी इस घटना से प्रभावित होकर अपनी पत्नी नीली से क्षमा मांगी और जिनधर्म को अंगीकार कर लिया। इन सब घटनाओं से नीली सती संसार से विरक्त हो गई और उसने आर्यिका व्रत अंगीकार कर लिया और राजगृही में समाधिमरण में किया। वहाँ आज भी एक स्थान 'नीली बाई की गुफा' के नाम से प्रसिद्ध है और जगत में शीलधर्म का यशोगाथा कर रहा है।

–आत्माराधिका से साभार

अनमोल वचन

गति को नही मति को बदलना है,
दशा को नही दिशा को बदलना है,
दूसरों को नही स्वयं को बदलना है।

हमारा जैन भूगोल

पृथ्वी गोल नहीं समतल है

विज्ञान के अनुसार पृथ्वी गोल है। इस तरह यदि कोई पृथ्वी के एक छोर से यात्रा प्रारंभ करे तो पृथ्वी गोल होने के कारण उसे वापस वही पर आना चाहिये जहाँ से यात्रा प्रारंभ की थी। ई.सन् 1938 में केप्टन जे.रास. ने केप्टन द फ्रेशियर के साथ दक्षिणी महासागर में दक्षिणी ध्रुवप्रदेश में 30. अक्षांश पर बर्फ के पहाड़ों से स्लेज गाड़ी से यात्रा प्रारंभ की। वहाँ उन्होंने आवश्यक सामान लेकर अन्य सामग्री छोड़ते हुये 450 से 1000 फुट ऊँची बर्फ की दीवाल पर अपनी यात्रा की। उन्होंने एक ही दिशा में चालीस हजार मील की यात्रा की। लगातार चार वर्ष तक एक ही दिशा में यात्रा की फिर उस दिशा का अंत नहीं मिला। अन्ततः दिशा सूचक यंत्र की सहायता से जहाँ से चले थे वहीं वापस आ गये।

आज के विज्ञान के अनुसार दक्षिणी ध्रुव प्रदेश से पृथ्वी की परिधि 10700 मील होती है। केप्टन जे.रास ने 40000 मील की यात्रा की। यदि पृथ्वी गोल होती तो वे यात्रा प्रारंभ करने के स्थान पर चार बार आ गये होते। इस प्रयोग से हमें ज्ञात होता है कि पृथ्वी गोल नहीं है, बहुत विशाल है। आज स्कूलों में यह सिखाया गया है कि पृथ्वी के चारों ओर कई बार प्रदक्षिणा की जा चुकी है। परन्तु यह सत्य नही है।

– समकित जैन, पूना

◆आत्म कल्याण में कठिनता की कल्पना ही कठिनाई है।
◆सुखी को इच्छा नहीं और इच्छा वाला सुखी नहीं।
◆हाथ फैलाना हीनता-दीनता की निशानी है।
हाथ जोड़ना पात्रता की निशानी है।
और हाथ पर हाथ रखना वीतरागता की निशानी है।
◆जीवन भर प्रवचनों में मत बैठो, प्रवचनों को जीवन में बिठाओ।

जंगल में महावीर जयंती

समकित वन के राजा शेरसिंह के महल में आज चहल-पहल दिख रही थी। राजा शेर सिंह ने आज सभी जानवरों की मीटिंग बुलाई थी। गजराज, चंपू बंदर, मिंटू खरगोश पहुँच चुके थे। अन्य जानवरों का आना जारी थी। ठीक 9 बजे लगभग सभी जानवर आ गये। शेर सिंह ने मीटिंग के पहले मंगलाचरण के लिये कोयलरानी को आवाज दी। कोयल रानी ने अपने मधुर स्वर में णमोकार मंत्र बोलकर पंचपरमेष्ठी की वंदना की। शेरसिंह ने सभा का शुभारंभ करते हुये कहा कि प्यारे साथियो! आज मैंने एक विशेष कार्य के लिये आप सबको यहाँ बुलाया है। आपको शायद पता होगा कि 28 मार्च को अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जन्म जयंती आ रही है। हम सब भगवान महावीर के शासन काल में ही जी रहे हैं। मेरी बहुत भावना है कि हम सब भी समकित वन में महावीर जयन्ती का आयोजन धूमधाम से करें।

क्षमा करें महाराज! यह पर्व तो मनुष्यों का है। हम इस पर्व को क्यों मनायें ? – चंपू बंदर ने हिम्मत करके कहा।

हाँ हाँ महाराज! हम सब तो तिर्यन्च गति के जीव हैं और भगवान महावीर स्वामी तो मनुष्य गति के थे। उनसे हमारा क्या संबंध ?– बिल्लू सियार ने होशियारी दिखाते हुये कहा।

सभी जानवर एक दूसरे से बातें करने लगे। कुछ जानवर धीरे-धीरे बात कर रहे थे कि आखिर महाराज महावीर जयन्ती मनाने का इतना उत्साह क्यों दिखा रहे हैं ? लेकिन डर के कारण कोई कुछ भी नहीं बोल रहा था।

तभी पंडित हिरणजी ने सभी को शांत करते हुये कहा कि आप सभी शांत हो जाइये। हमारे महाराज बहुत बुद्धिमान हैं। यदि उन्होंने कोई बात कही है तो बहुत विचार पूर्वक कही होगी। हमें अपने महाराज से पूरी बात सुनना चाहिये। पंडित हिरण महाराज की ओर की मुंह करके बोले – महाराज! आप अपनी पूरी बात कहिये।

महाराज शेरसिंह ने अपनी कड़कती आवाज में कहा – मेरे साथियो! आपके मन में प्रश्न उठना स्वाभाविक है। आपको लोगों शायद यह मालूम नहीं है कि भगवान महावीर ने अपनी मोक्ष की यात्रा तिर्यन्च गति से ही प्रारंभ की थी।

क्या मतलब ?– मोंटू गधे ने आश्चर्य से पूछा।

अरे मोंटू! जो भी जीव मोक्ष जाता है उसका प्रारंभ आत्म अनुभव से होता है और आत्म अनुभव किसी भी गति में हो सकता है। आपको मालूम होना चाहिये कि भगवान महावीर अपने 10 भव पहले की पर्याय में शेर थे।

क्या ? – जंबो हाथी ने आश्चर्य व्यक्त करते हुये कहा।

हाँ भाई! और आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि जब वे शेर अवस्था में हिरण का मांस खा रहे थे तभी दो दिगम्बर मुनिराज आकाश मार्ग से आये और उन्हें संबोधन प्रदान किया और कहा हे मृगराज! तुम तो भविष्य के तीर्थंकर होने वाले हो। यह कार्य तुम्हे शोभा नहीं देता। मुनिराजों के उपदेश से प्रभावित होकर उस शेर ने मांस खाना छोड़कर प्रायश्चित किया और उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त हो गया। उस शेर ने समाधिमरण पूर्वक देह का त्याग किया।

अरे वाह! उस शेर ने तो कमाल कर दिया।

इसलिये तो मैं कह रहा हूँ कि भगवान महावीर ने हमारी ही गति से अपना मोक्षमार्ग प्रारंभ किया था और दस भव बाद तीर्थंकर बन गये थे। इसलिये हमें उनका जन्मोत्सव उत्साह से मनाना चाहिये।

मिनमिन जिराफ अपनी गर्दन ऊँची करते हुये बोला – ये पर्व तो शेर जाति को ही मनाना चाहिये। हम सब क्यों मनायें ?

तुम गलत सोच रहे हो मिनमिन। पंडित हिरणजी ने समझाते हुये कहा। ये सच है कि भगवान महावीर की पूर्व शेर में सम्यग्दर्शन हुआ लेकिन वह तो संज्ञी पंचेन्द्रिय। हम सब में जाति का अंतर है गति का नहीं और जैसे शेर को आत्मज्ञान हो गया था वैसे हम सब भी आत्मज्ञान करके मोक्षमार्ग प्रारंभ कर सकते हैं। ये तो हमारे लिये गौरव की बात है।

तब तो हमें महाराज का धन्यवाद देना चाहिये क्योंकि उन्होंने हमें महावीर जयन्ती की बात कहकर एक मंगलकारी अवसर प्रदान किया है। – सोनू भालू ने कहा।

महाराज! आप ही बतायें हमें क्या करना होगा ?– चिंकी बिल्ली ने मुस्कराते हुये पूछा।

महाराज बोले – हम सब 28 मार्च को भगवान महावीर की पूजन करेंगे और सारे समकित वन के जानवर मिलकर एक विशाल रैली निकालेंगे। पड़ोसी रत्नत्रय वन से पण्डितजी आ रहे हैं, रात्रि को हम उनके प्रवचन का लाभ लेंगे और भक्ति भी करेंगे।

भोलू हाथी ने चिल्लाकर कहा – अरे वाह! यह तो बहुत सुन्दर कार्यक्रम है। हाँ तो सब मिलकर बोलिये भगवान महावीर स्वामी की जय।

Yes and No

Tell Me :

Are you Jiva ?	Yes, Yes, Yes
Is Body a Jiva ?	No, No, No,
Do you have power to know ?	Yes, Yes, Yes
Does body have "Power to know"?	No, No, No,
Do you know everything ?	Yes, Yes, Yes
Does Body know anything ?	No, No, No,
Do you know the body ?	Yes, Yes, Yes
Do you perform the work of Body ?	No, No, No,
Do you want to be happy ?	Yes, Yes, Yes
Do you want to be unhappy ?	No, No, No,
Will you develop understanding of the Soul ?	Yes, Yes, Yes
Will you keep wrong knowledge ?	No, No, No,

ये कैसा अप्रैल फूल

मनन पढ़ाई में बहुत होशियार था। उसकी पढ़ाई अच्छी तरह से हो इसलिये उसके पापा ने शहर के अच्छे स्कूल में उसे पढ़ने भेज दिया और रहने के लिये उसे होस्टल में बढ़िया व्यवस्था करवा दी थी। उसी होस्टल में चिन्टू भी था। उसकी शैतानी के कारण उसके माता–पिता ने उसे होस्टल में भेज दिया। वह मनन से बहुत ईर्ष्या करता था और हमेशा मनन को परेशान करने के उपाय सोचता रहता था। परीक्षायें आने वालीं थीं और मनन दिन रात पढ़ाई में लगा रहता था। परंतु चिन्टू का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था। 1 अप्रेल को चिन्टू ने सोचा कि आज मनन को अप्रेल पूल बनाया जाये तो मजा आ जाये। मनन होस्टल की छत पर पढ़ाई कर रहा था। चिन्टू ने नीचे से चिल्लाकर कहा– मनन! तुम्हारा फोन आया है। मनन ने ऊपर से ही पूछा – किसका फोन है ? चिन्टू ने सांस फूलने का अभिनय करते हुये कहा – तुम्हारे किसी आंटी का फोन है वे कह रहे हैं तुम्हारे मम्मी–पापा का एक्सीडेंट हो गया है। क्या – मनन के मुंह से चीख निकली। वह भागकर सीढ़ी उतरने लगा। घबराहट के कारण उसका पैर फिसल गया और वह सीधा नीचे आ गया और बेहोश हो गया। यह देखकर चिन्टू घबरा गया और वहाँ से भाग गया। मनन की आवाज सुनकर उसके दोस्त और होस्टल वार्डन आ गये। मनन को तुरंत हॉस्पिटल ले जाया गया तो मालूम हुआ कि उसके पैर की एक हड्डी टूट गई है । वार्डन ने पूछा कि तुम भाग क्यों रहे थे ? मेरा फोन आया था। मनन ने बताया। वार्डन ने कहा – नहीं कोई फोन नहीं आया। मनन तुरंत समझ गया कि यह सब चिन्टू ने मुझे अप्रेल फूल बनाने के लिये यह शैतानी की है। वह चुप रहा। उधर चिन्टू बहुत डर रहा था कि अब मुझे बहुत डांट पड़ेगी हो सकता है मुझे होस्टल से बाहर निकाल दिया जाये। जब उसे मालूम हुआ कि मनन ने किसी को कुछ नहीं बताया तो उसकी आंखों में आंसू आ गये। वह मनन के पास गया और मनन से क्षमा मांगते हुये रोने लगा। मनन ने उसे समझाया कि तुम्हारे एक झूठ ने मेरी यह हालत कर दी। मैं तो बस इतना चाहता हूँ कि तुम पढ़ाई में मन लगाओ। मेहनत करने से हर कार्य आसान हो जायेगा। चिन्टू ने प्रतिज्ञा ली कि वह अब पढ़ाई में मन लगायेगा और किसी को तंग नहीं करेगा। कुछ दिनों बाद मनन और चिन्टू दोनों अच्छे दोस्त बन गये और चिन्टू बहुत खुश था क्योंकि उसे सुन्दर भविष्य के साथ अच्छा दोस्त भी मिल गया था।

छहढ़ाला के वीडियो को समाज का अच्छा प्रतिसाद

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर द्वारा पं. दौलतरामजी की लोकप्रिय रचना छहढाला पर वीडियो तैयार किया गया। इस नवनिर्मित वीडियो को अनेक साधर्मियों द्वारा सराहना मिल रही है। प्रस्तुत हैं साधर्मियों के विचार –

1. अध्यात्म की रूचि हो गई है.– मैं अध्यात्म से बहुत दूर रहता हूँ, पर पं. सौरभजी के आग्रह पर जब मैंने छहढाला का वीडियो देखा तो हृदय रोमांचित हो गया और मुझे लगा कि मुझे भी अध्यात्म के रहस्यों को समझने का प्रयास करना चाहिये।

– नरेश जैन

2. इसमें लय और संगीत का एक अद्‌भुत समायोजन है, जिसके माध्यम से हम जैसे नई पीढ़ी के लोग आगम का अधिक अभ्यास न होते भी छहढाला जैसे गंभीर और रोचक विषय को सरलता से समझ सकते हैं।

– श्रुति–आदित्य जैन, मुंबई

3. वैसे तो मैंने दिगम्बर जैन मुनियों का स्वरूप कई बार पढ़ा और सुना है, परन्तु छहढाला वीडियो की छठवीं ढाल देखते हुये मुझे मुनियों की अपूर्व महिमा आई। ऐसी अनुभूति मुझे आज तक नहीं हुई।

– श्री रवीन्द्र जैन, भावनगर

4. मैनें श्री सौरभजी, विरागजी, गौरवजी द्वारा निर्मित छहढाला वीडियो देखा जिसे देखकर अतिहर्ष हुआ, इसके लिये आप सभी का धन्यवाद।

– श्री अशोक जैन (अरिहंत केपिटल ग्रुप, मुम्बई)

5. आपके द्वारा निर्मित छहढाला की लय बहुत सरल है, अर्थ भी सुगम भाषा में है। इसे कई बार देखने और सुनने के बाद भी मन नहीं भरता।

– श्री अजीत बाकलीवाल, इंदौर

6. आपके द्वारा बनाई गई छहढाला का वीडियो मैं प्रतिदिन देखता–सुनता हूँ और प्रतिदिन नये आध्यात्मिक विचारों से सराबोर हो जाता हूँ।

– विनय गांधी, खनियांधाना म.प्र.

7. You have done a wonderful job complaining the whole chhadhala. Congratulations for doing such a wonderful job. I throughly enjoyed playing them.
Keep up with the great work you are doing. Once again my sincere congratulations on doing such a marvelous job.

- Kirit Gosalia. Nairobi

1. भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा यदि पद्मावती के मूर्ति के सिर पर हो तो वहां पूजन भक्ति कर सकते हैं क्या ?

उत्तर– एक नारी के सिर पर अरहंत भगवान की प्रतिमा होना ही अयोग्य है, फिर पूजा का तो प्रश्न ही नहीं है।

–विनय जैन, रीवा (म.प्र.)

2. पूजन प्रक्षाल करनेवाले लोग प्रतिमा के ऊपर लगा छत्र घुमाते हैं, क्या यह ठीक है ?

उत्तर – यह एक बिना विवेक की परम्परा चल पड़ी है। अचल छत्र को घुमाना तो अपशकुन का प्रतीक है। स्वप्नफलों में बताया है कि घूमता हुआ छत्र दिखे तो वह मनुष्य राज्य भ्रष्ट हो जायेगा।

– कान्तिलाल जैन (ललितपुर)

3. कोई हमसे पूछे कि अंडे की दुकान कहां है ? सच जानते हुए हम कह देवें कि हमें नहीं मालूम तो क्या इससे झूठ का पाप लगेगा ?

उत्तर – जिससें अहिंसा की रक्षा होती हो वह झूठ भी सत्य है। क्योंकि सत्य भी अहिंसा की रक्षा के लिए है।

– मनस्वी जैन (अकोला)

यदि आपके मन में भी कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिखकर भेजिये हम उसका समाधान करने का प्रयास करेंगे।

मैं नहीं चाहता ....!!!

समर्पण बांसवाडा (राज.)

मैं नहीं चाहता कि
मेरी सन्तान ऐसा / इतना पढ़े कि
वह जिनवाणी माँ एवं अपनी माँ की भाषा भूल जाये।
मैं नहीं चाहता कि
वह इतना आगे बढ़े कि अपने धर्म पिता पंचपरमेष्ठी
व मुझसे बात करना ही भूल जाये।
मैं नहीं चाहता कि
वह धन सम्पदा इतनी कमाये कि
वह धर्म सम्पदा को ही भूल जाये।
मैं नहीं चाहता कि
वह इतनी ऊँची मंजिल चढ़े कि
उसे अपने में उतरने का समय ही न रह जाये।
मैं नहीं चाहता कि
उसे देश जाने, विदेश जाने
वह भी सबको जाने पर
तीर्थकरों/आचार्यों की परम्परा को भूल जाये।
मैं नहीं चाहता कि
वह फास्ट फूड/जंक फूड के स्वाद में
श्रावकाहार को ही भूल जाये।
मैं नहीं चाहता.....!!!
पर क्या चाहा हुआ होता है ?
होगा तो वही जो उसकी क्रमबद्ध में होगा
पर फिर भी पता नहीं क्यों ?
मैं ऐसा चाहता हूँ कि
सब उसे जाने या ना जाने
वह सब को जाने या ना जाने
पर हे प्रभो! वह इस जीवन में
अपनी आतमा को जाने व पहिचाने,
बस और कुछ मैं नहीं चाहता।।

संस्था द्वारा होली पर जनजागरण हेतु विशाल पोस्टर प्रकाशित

इस वर्ष होली के अवसर पर के रंगों से होने वाले शारीरिक नुकसान के प्रति जन जागरण करने के उद्देश्य से एक विशाल पोस्टर का प्रकाशन किया गया। साथ ही इस पोस्टर में होली के अवसर पर अनावश्यक लकड़ी जलाने से होने वाले सामाजिक और आर्थिक नुकसान के प्रति जाग्रत किया गया। इसका प्रकाशन आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन जबलपुर और अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इसे देश के विभिन्न भागों में और अनेक विद्यालयों में वितरित किया गया, जिससे प्रभावित होकर अनेक युवाओं और बालकों ने होली ने खेलने का संकल्प लिया। इसके प्रकाशन में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई, श्री मुकेशजी करेली, श्री संतोष पाटनी वाशिम, श्री श्रेयांस शास्त्री जबलपुर, श्री विराग शास्त्री देवलाली ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इसकी परिकल्पना श्री संजय शास्त्री, जयपुर ने की।

आगामी बाल शिविर

दिनांक 26 अप्रेल से 5 मई 2010 तक	– होशंगाबाद, भोपाल के आसपास 35 स्थानों पर सामूहिक शिविर
दिनांक 1 मई से 8 मई 2010 तक	– बाल संस्कार शिविर, देवलाली
दिनांक 15 मई से 3 जून 2010 तक	– शिक्षण प्रशिक्षण शिविर, देवलाली
दिनांक 16 मई से 23 जून 2010 तक	– चैतन्य धाम, अहमदाबाद
दिनांक 5 जून से 13 जून 2010 तक	– भिण्ड के आसपास 100 स्थानों पर सामूहिक शिविर
दिनांक 8 जून से 16 जून 2010 तक	– बाल संस्कार शिविर, सिद्धायतन
दिनांक 15 जून से 22 जून 2010 तक	– बाल संस्कार शिविर, जबलपुर

पाप का बाप इससे पूर्व आपने पढ़ा कि बनारस से पढ़कर आये एक विद्वान को वेश्या ने पाप का बाप कौन है इसका उत्तर देने के लिये अपने घर बुलाया। उसे धन का लोभ देकर उससे अपने घर पर ठहरने के लिये मजबूर किया। फिर उसे भोजन के लिये कहा। अब आगे -

भोजन तो आपने अपने हाथ से बना ही लिया। अब तो हमारी एक ही इच्छा है। कि आप हमारे हाथ से ही भोजन कर लेते तो हमारे सब पाप धुल जाते। और हां पंडित जी इसके लिये आपको कुछ प्रायश्चित करना पड़े तो उसके लिये हाजिर है आपकी सेवा में 500 रूपये।
500 रूपये मिल रहे है। मेरा क्या बिगड़ जायेगा इसके हाथ से भोजन करने में। जैसे मेरे हाथ वैसे इसके हाथ बल्कि इसके हाथ तो हमसे भी कोमल है बेचारी का मन भी रह जायेगा और असल बात तो यह है कि यहां देखते भी कौन है।
तुम इतना आग्रह कर रही हो तो चलो तुम्हारे हाथ से एक ग्रास ले लेगें
पंडित जी ने ग्रास लेने के लिये मुंह खोला तो वेश्या ने ग्रास देने के बजाय गाल पर थप्पड जड दिया...
यह क्या किया तुमने? तुम बडी दुष्ट हो, पापी हो, तुम्हारा सुधार कभी न हो सकेगा।
पंडित जी महाराज अब तो समझ गये होगें पाप का बाप क्या है। "लोभ" जिसने आपको यहां तक गिरा दिया। कि मेरे हाथ से भी भोजन करने को तैयार हो गये। घर लौट जाओ अब बनारस आने की जरूरत नही।
इसीलिये तो पं. धनात राय जी ने लिखा है:- "लोभ पाप का बाप बरवाने"